स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा - तृतीय खण्ड
(षष्ठ पत्र - प्रयोजनमूलक हिन्दी)

- डॉ० सुन्ना साह
हिन्दी विभाग

वैज्ञानिक, तकनीकी हिन्दी

वैज्ञानिक एवं तकनीकी हिन्दी के अन्तर्गत भौतिक, रसायन, वनस्पति एवं जीव विज्ञान की इन चारों शाखाओं से सम्बन्धित भाषा और प्रौद्योगिकी, प्रेस, फैक्ट्री आदि में प्रयुक्त भाषा-रूप आ जाते हैं। इन सभी प्रयुक्ति-रूप-प्रयुक्तियों की अपनी शब्दावलियाँ होती हैं तथा कुछ अंश तक इनमें संरचनात्मक भेद भी होता है। इन भाषा रूपों की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं -

1) सुस्पष्टता एवं परिशुद्धता -

वैज्ञानिक एवं तकनीकी भाषा सुस्पष्ट सुनिश्चित, संक्षिप्त, सुबोध और सरल होनी चाहिए। शब्दों के निर्धारण-निर्माण तथा लिप्यंतरण प्रक्रिया में यह ध्यान दिया गया है कि सुस्पष्टता एवं परिशुद्धता की रक्षा हो। भाषिक संरचना की दृष्टि से भी इसके प्रति ध्यान दिया गया है।

(2) संक्षिप्तता एवं सुबोधता -

संक्षिप्तता एवं सुबोधता वैज्ञानिक-तकनीकी भाषा की सबसे बड़ी विशेषता है। संक्षिप्तता से तात्पर्य है कि थोड़े शब्दों में विषयनिष्ठ विचारों को स्पष्ट करने की क्षमता। विभिन्न प्रकार की अवधारणाओं से संबंधित पारिभाषिक शब्दों का निर्माण, निर्धारण एवं अनुवाद प्रयोजनमूलक हिन्दी के इस क्षेत्र में हो रहा है सुबोधता का तात्पर्य वाग्जाल और निष्प्रयोजनता के विपर्यय से है।

(3) वस्तुनिष्ठता -

वैज्ञानिक भाषा औपचारिक होती है यह अनुसंधान की समस्याओं और परिणामों के प्रति वैज्ञानिक वस्तुपरक चिन्तन शैली की प्रतिपादक है।

(4) वैज्ञानिक शैली -

~~वैज्ञानिक~~ शैली से तात्पर्य वस्तुनिष्ठ शैली से है। यहाँ विषय का प्रतिपादन महत्वपूर्ण है, उसका भाषाई सौंदर्य नहीं।

इन सभी विशेषताओं के साथ ही तथ्यपरकता, अर्थ का स्पष्टीकरण, तार्किकता, तकनीकीप्रधानता, पारदर्शिता आदि विशेषताएँ हो सकती हैं। वैज्ञानिक और तकनीकी हिन्दी का शब्द स्रोत संस्कृत और अंतरराष्ट्रीय शब्दावली दृष्टिगत होता है।

Scanned with CamScanner